Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

उत्तर प्रदेश

(राज्य विशेष)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: BRPM22

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

उत्तर प्रदेश

(राज्य विशेष)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**उत्तर प्रदेश : सामान्य परिचय**	**5-13**
2.	**उत्तर प्रदेश : प्राचीन इतिहास**	**14-26**
3.	**उत्तर प्रदेश : मध्यकालीन इतिहास**	**27-33**
4.	**उत्तर प्रदेश : आधुनिक इतिहास**	**34-43**
5.	**उत्तर प्रदेश : भौगोलिक स्थिति व भौतिक संरचना**	**44-50**
	5.1 स्थिति एवं विस्तार	44
	5.2 भौतिक संरचना	47
6.	**उत्तर प्रदेश : जलवायु एवं मृदा**	**51-56**
	6.1 जलवायु क्षेत्र	51
	6.2 ऋतुएँ	52
	6.3 मिट्टियाँ	53
7.	**उत्तर प्रदेश : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई**	**57-68**
	7.1 अपवाह तंत्र	57
	7.2 सिंचाई	61
	7.3 बहु-उद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ	66
8.	**उत्तर प्रदेश : कृषि व पशुपालन**	**69-82**
	8.1 कृषि	69
	8.2 पशुपालन	79
9.	**उत्तर प्रदेश : वन एवं वन्यजीव अभयारण्य**	**83-89**
10.	**उत्तर प्रदेश : खनिज संसाधन**	**90-93**
11.	**उत्तर प्रदेश : अर्थव्यवस्था एवं औद्योगीकरण**	**94-114**
	11.1 उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था	94
	11.2 उत्तर प्रदेश का औद्योगीकरण	96
12.	**उत्तर प्रदेश : ऊर्जा संसाधन**	**115-128**
13.	**उत्तर प्रदेश : परिवहन एवं संचार**	**129-142**
	13.1 परिवहन	129
	13.2 संचार	140

14. उत्तर प्रदेश : जनगणना-2011 **143-149**

15. उत्तर प्रदेश : राजव्यवस्था एवं प्रशासन **150-173**
15.1 उत्तर प्रदेश विधायिका/विधानमंडल 150
15.2 उत्तर प्रदेश की कार्यपालिका 154
15.3 उत्तर प्रदेश न्यायपालिका 163

16. उत्तर प्रदेश : पंचायती राज व्यवस्था **174-180**
16.1 उत्तर प्रदेश में पंचायतों के विकास के विभिन्न चरण 174
16.2 उत्तर प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का पदानुक्रम 175
16.3 उत्तर प्रदेश में पंचायती राज का वर्तमान प्रशासकीय ढाँचा 177
16.4 नगर निकाय प्रणाली 178
16.5 उत्तर प्रदेश वित्त आयोग 178

17. उत्तर प्रदेश : शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद **181-199**
17.1 उत्तर प्रदेश : शिक्षा 181
17.2 उत्तर प्रदेश : स्वास्थ्य 188
17.3 उत्तर प्रदेश : खेलकूद 190

18. उत्तर प्रदेश : पर्यटन **200-211**
18.1 पर्यटन सर्किट 200
18.2 पर्यटन समसामयिकी 204
18.3 प्रमुख पर्यटन स्थल 205
18.4 उत्तर प्रदेश पर्यटन नीति, 2018 207

19. उत्तर प्रदेश : कला एवं संस्कृति **212-232**

20. उत्तर प्रदेश : पुरस्कार एवं सम्मान **233-237**

21. उत्तर प्रदेश : राज्य संचालित योजनाएँ **238-244**

22. उत्तर प्रदेश : समसामयिकी **245-252**

23. उत्तर प्रदेश : प्रसिद्ध व्यक्तित्व **253-263**

24. उत्तर प्रदेश बजट (2018-19) : एक विश्लेषण **264-270**
24.1 उत्तर प्रदेश बजट, 2018-19 264
24.2 वित्तीय वर्ष 2018-19 के बजट अनुमान 267
24.3 उत्तर प्रदेश सरकार के अनुपूरक बजट (2018-19) के प्रमुख बिंदु 268

25. विविध **271-280**

अध्याय
1

उत्तर प्रदेश : सामान्य परिचय
(Uttar Pradesh : General Introduction)

राज्य का पुनर्गठन : 1 नवंबर, 1956 को

राज्य का नाम : 1836 से उत्तर-पश्चिम प्रांत
: 1877 से उत्तर-पश्चिम आगरा एवं अवध प्रांत
: 1902 से संयुक्त प्रांत आगरा एवं अवध
: 1937 से केवल संयुक्त प्रांत
: 24 जनवरी, 1950 से उ.प्र.

राज्य की राजधानी : 1836 से आगरा
: 1858 से इलाहाबाद
: 1921 से लखनऊ (आंशिक)
: 1935 से लखनऊ (पूर्णतः)

- उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड : कानपुर।
- अमिताभ बच्चन स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स : इलाहाबाद।
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (निफ्ट) : रायबरेली।
- भारतीय हथकरघा तकनीकी संस्थान : चौकाघाट (वाराणसी)।
- उत्तर प्रदेश ग्रामीण आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय : सैफई (इटावा)।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. उत्तर प्रदेश की सीमा-रेखा भारत के कितने राज्यों से मिलती है? **UPPCS (Mains) 2017**
   (a) 6 (b) 7
   (c) 8 (d) 9
2. निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तर प्रदेश का राजकीय पुष्प है? **UPPCS (Mains) 2016**
   (a) टेसू (b) गुलाब
   (c) नील कमल (d) चंपा
3. निम्नलिखित में से कौन उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला मुख्यमंत्री थीं? **UP (RO/ARO) Pre 2016**
   (a) श्रीमती राजेंद्र कुमारी बाजपेयी
   (b) श्रीमती सुचेता कृपलानी
   (c) सुश्री मायावती
   (d) श्रीमती सरोजिनी नायडू
4. अब तक उत्तर प्रदेश में कितनी महिलाएँ मुख्यमंत्री के पद पर रहीं? **UPPCS (Mains) 2015**
   (a) 0 (b) 1
   (c) 2 (d) 3
5. गौतमबुद्ध नगर ज़िले का मुख्यालय है- **UPPCS (Mains) 2015**
   (a) ग्रेटर नोएडा में (b) गाज़ियाबाद में
   (c) रमाबाई नगर में (d) नोएडा में
6. उत्तर प्रदेश के राजकीय चिह्न में नहीं है- **UPPCS (Mains) 2014**
   (a) मछलियाँ (b) धनुष
   (c) तीर (d) मोर
7. निम्न में से उत्तर प्रदेश के किस जनपद में कालिंजर का किला स्थित है? **UP (RO/ARO) Mains 2013**
   (a) झाँसी (b) बाँदा
   (c) चित्रकूट (d) जालौन
8. उत्तर प्रदेश का राजकीय पक्षी है- **UPPCS (Pre) 2011**
   (a) मोर (b) सारस
   (c) तोता (d) कोयल
9. वर्तमान में उत्तर प्रदेश में मंडलों की संख्या है-
   (a) 17 (b) 18
   (c) 20 (d) 27
10. उत्तर प्रदेश का राजकीय खेल क्या है?
    (a) क्रिकेट (b) बैडमिंटन
    (c) हॉकी (d) टेनिस
11. उत्तर प्रदेश का राजकीय पशु है-
    (a) हाथी (b) शेर
    (c) भालू (d) बारहसिंगा

उत्तरमाला

1. (d) 2. (a) 3. (b) 4. (c) 5. (a) 6. (d) 7. (b) 8. (b) 9. (b) 10. (c) 11. (d)

अध्याय
2

उत्तर प्रदेश : प्राचीन इतिहास
(Uttar Pradesh : Ancient History)

उत्तर प्रदेश में पुरातात्त्विक उत्खनन से पाषाणकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त हुई है। इस राज्य में पाषाणकालीन मानव गतिविधियों के अधिकांशत: साक्ष्य विंध्य पर्वत से सटे इलाकों से प्राप्त हुए हैं। उपकरणों की बनावट के आधार पर प्रागैतिहासिक काल को निम्नानुसार बाँटा जा सकता है–

पुरापाषाण काल *(Palaeolithic age)*

- उत्तर प्रदेश में बेलन नदी घाटी, सोनभद्र की सिंगरौली घाटी व चंदौली के चकिया से पुरापाषाण काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं। बेलन नदी घाटी के चोपानीमांडो व लोहंदा नाला नामक स्थल से पुरापाषाण काल से संबंधित जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं। चोपानीमांडो से तो पुरापाषाणकाल से लेकर नवपाषाणकाल तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बेलन नदी घाटी (बेलन नदी, टोंस की सहायक नदी है) आधुनिक उत्तर प्रदेश राज्य के सोनभद्र, मिर्ज़ापुर व इलाहाबाद ज़िले में विस्तृत है।
- चोपानीमांडो से चर्ट नामक पत्थर से बने पाषाण उपकरण के अलावा भेड़-बकरियों की हड्डियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जबकि भेड़-बकरी स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि इन्हें उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों से लाया जाता था। यहाँ झोंपड़ियों के भी प्रमाण मिले हैं।
- लोहंदा नाला से भी लघुपाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। साथ ही यहाँ से अस्थि निर्मित मातृदेवी की मूर्ति भी मिली है।
- चंदौली के चकिया नामक स्थान से भी पुरापाषाण काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

मध्यपाषाण काल *(Mesolithic age)*

- इस काल में उत्तर प्रदेश में मानव गतिविधियों का प्रसार हुआ। इस काल में विंध्य क्षेत्र के अंतर्गत इलाहाबाद ज़िले की मेजा, करछना व बारा तहसील के साथ-साथ मिर्ज़ापुर व बुंदेलखंड के क्षेत्रों से मध्यपाषाण काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग की ओर से मिर्ज़ापुर ज़िले में स्थित मोरहना पहाड़, बघहीखोर, लेहखहिया या लेखहिया का उत्खनन हुआ है जिससे उत्तर प्रदेश के मध्यपाषाणकालीन स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। इनमें लेखहिया एक महत्त्वपूर्ण स्थल है। इस स्थान से 17 नर कंकाल प्राप्त हुए हैं जिनमें अधिकांश के सिर पश्चिम दिशा में हैं।
- इलाहाबाद ज़िले की मेजा तहसील में ही स्थित चोपानीमांडो से भी मध्यपाषाण काल के अवशेष प्राप्त हुए।
- आधुनिक प्रतापगढ़ ज़िले में स्थित सराय नाहर राय, महदहा एवं दमदमा महत्त्वपूर्ण मध्यपाषाणकालीन स्थलों के रूप में चिह्नित किये गए हैं। इन स्थलों का उत्खनन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष जी.आर. शर्मा तथा इनके सहयोगियों आर.के. वर्मा एवं वी.डी. मिश्र के द्वारा करवाया गया।
- सराय नाहर राय से लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। यहाँ से शवाधान एवं गर्त चूल्हों का भी साक्ष्य प्राप्त हुआ है। इन शवाधानों से तत्कालीन मृतक संस्कार विधि पर प्रकाश पड़ता है। समाधिस्थ शवों का सिर पश्चिम तथा पैर पूर्व की ओर हैं। गर्त चूल्हों के पास पशुओं की अधजली हड्डियाँ भी मिली हैं।
- महदहा एवं दमदमा से भी वृहद् संख्या में लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। महदहा से हड्डी एवं सींग से निर्मित उपकरण एवं आभूषण भी बड़े पैमाने पर प्राप्त हुए हैं (कुछ स्रोतों में सरायनाहर राय, महदहा एवं दमदमा तीनों स्थलों से हड्डी एवं सींग निर्मित आभूषण प्राप्ति का उल्लेख है)।

अध्याय
3

उत्तर प्रदेश : मध्यकालीन इतिहास
(Uttar Pradesh : Medieval History)

मध्य काल में भारत पर आधिपत्य स्थापित करने वाले दिल्ली सल्तनत के शासकों और मुगलों का उत्तर प्रदेश से गहरा संबंध रहा। इन शासकों द्वारा यहाँ जौनपुर और फिरोज़ाबाद के रूप में नगर बसाए गए। विश्व प्रसिद्ध कई स्थापत्यों, जैसे- ताजमहल, आगरा का किला, फतेहपुर सीकरी आदि का निर्माण कराया गया।

दिल्ली सल्तनत *(Delhi Sultanate)*

- भारत में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा 1206 में गुलाम वंश की स्थापना की गई। ऐबक के बाद इल्तुतमिश सुल्तान बना और इसने सल्तनत के सामने विद्यमान मुश्किलों का खुलकर सामना किया। इसने मंगोलो के आक्रमण से सल्तनत की रक्षा की। इसके बाद खिलजी वंश तथा तुगलक वंश के शासकों ने धीरे-धीरे दिल्ली की सीमा का विस्तार किया। वर्तमान उत्तर प्रदेश का अधिकांश क्षेत्र इन शासकों के साम्राज्य का अंग रहा। तुगलक वंश के शासक फिरोज़शाह तुगलक ने उत्तर प्रदेश में दो नए नगरों फिरोज़ाबाद एवं जौनपुर का निर्माण कराया।
- जौनपुर वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य में अवस्थित प्रमुख सल्तनतकालीन नगर है जिसकी स्थापना सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक ने अपने भाई जौना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) की स्मृति में की थी।
- तैमूर के आक्रमण के समय दिल्ली में फैली अस्थिरता का लाभ उठाकर सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के एक दास मलिक सरवर (ख्वाजाजहाँ) ने सन् 1394 में स्वतंत्र जौनपुर राज्य की स्थापना की।
- इसको तुगलक वंश के सुल्तानों ने 'मलिक उस शर्क' की उपाधि दी थी। इसी कारण उसके द्वारा स्थापित साम्राज्य को 'शर्की साम्राज्य' कहा जाता है। शर्की सुल्तानों के शासनकाल में जौनपुर में अनेक स्थापत्यों का निर्माण कराया गया।
- शर्की वंश के शासक इब्राहिम शाह ने जौनपुर के अटाला मस्जिद का निर्माण कराया था।
- इस दौरान जौनपुर को शिक्षा, संस्कृति, कला एवं व्यापार का एक प्रमुख केंद्र बन जाने के कारण 'शिराज-ए-हिंदोस्तान' (पूर्व का शिराज) कहा जाने लगा।
- जौनपुर राज्य का अंतिम शासक हुसैनशाह शर्की था।
- सुल्तान बहलोल लोदी ने 1484 ई. में जौनपुर को जीत कर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया था।
- सिकंदर लोदी ने आगरा नामक एक नए नगर की स्थापना करवाई और 1504 ई. (अन्य स्रोतों में 1506 ई.) में आगरा को अपनी राजधानी बनाया।
- इब्राहिम लोदी के शासनकाल में बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और 1526 ई. में पानीपत की प्रथम लड़ाई में इब्राहिम लोदी को परास्त कर मुगल वंश की नींव डाली।

भक्ति एवं सूफी आंदोलन *(Bhakti and Sufi Movement)*

ईश्वर से व्यक्ति के आध्यात्मिक स्वरूप पर जोर देने वाला भक्ति आंदोलन भारत में तुर्कों के आने के बहुत पहले से चल रहा था। भक्ति के बीज वेदों में देखे जा सकते हैं, पर आरंभ में उस पर जोर नहीं दिया गया। भक्ति का वास्तविक विकास सातवीं से बारहवीं सदी के बीच दक्षिण भारत में हुआ। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के प्रचारक आध्यात्मिक संत थे, जिनके विचार कई प्रकार से समान थे। उनके अनुसार भक्ति का अर्थ एकाग्रचित्त और नि:स्वार्थ होकर ईश्वर की पूजा करना था तथा इनका मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना तथा प्रेम और उदारता का संदेश देना था।

भक्ति आंदोलन का प्रारंभ उपनिषदों, भगवद्गीता, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों के आधार पर हुआ, जबकि सूफी आंदोलन इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध तथा तुर्की शासन में व्याप्त घुटन एवं उदासी को दूर करने के लिये हुआ। इन आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इन्हें न तो राजकीय संरक्षण मिला और न ही राजनीतिक उतार-चढ़ाव से इनमें कोई विचलन आया। भक्ति संतों ने भक्त के प्रेम की तुलना सेवक का मालिक के प्रति सेवा भाव, मित्रों के मध्य प्रेम, शिशु के प्रति माँ

अध्याय
4

उत्तर प्रदेश : आधुनिक इतिहास
(Uttar Pradesh : Modern History)

प्राचीनकाल से वर्तमान तक उत्तर प्रदेश देश की राजनीति व शासन का सदैव ही केंद्र बना रहा। ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी इस प्रदेश की महत्ता को देखते हुए धीरे-धीरे यहाँ आधिपत्य जमाने का प्रयास किया। कंपनी द्वारा 1836 ई. में आगरा प्रेसीडेंसी के नाम से चौथी प्रेसीडेंसी की स्थापना की गई। आगे इसे उत्तर-पश्चिम प्रांत का नाम दिया गया। कंपनी ने अपने साम्राज्यवादी प्रसार क्रम में 1856 ई. में अवध का कुशासन के आरोप में ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया, लेकिन ब्रिटिश शासन की शोषणपरक नीतियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया भी स्वाभाविक थी और 1857 ई. का महान विद्रोह इस संबंध में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थी।

1857 ई. का विद्रोह *(Revolt of 1857 AD)*

- 1857 के महान विद्रोह की शुरुआत 10 मई, 1857 को उत्तर प्रदेश के मेरठ छावनी के सैनिकों के विद्रोह से हुई। 11 मई, 1857 को इन सैनिकों ने दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया।
- इस विद्रोह का तत्कालीन कारण कारतूसों में सूअर और गाय की चर्बी का प्रयोग करना बताया जाता है, लेकिन इस व्यापक विद्रोह का मूल कारण अंग्रेज़ों की हड़प नीति और आर्थिक शोषण था।
- दिल्ली पर कब्ज़े के एक महीने के अंदर ही विद्रोह उत्तर प्रदेश के लगभग सभी बड़े केंद्रों-कानपुर, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, बरेली और झाँसी तक फैल गया।
- **लखनऊ:** यहाँ बेगम हजरत महल ने अपने बेटे बिरजिस कादिर को नवाब घोषित कर दिया। एक लंबे संघर्ष के बाद मार्च 1858 में कैंपबेल ने गोरखा रेजीमेंट की सहायता से लखनऊ पर पुन: कब्ज़ा कर लिया। बेगम हजरत महल पलायन कर नेपाल चली गईं।
- **कानपुर:** यहाँ अंतिम मराठा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब को विद्रोहियों ने कमान सौंपी। तात्या टोपे (वास्तविक नाम रामचंद्र पांडुरंग) के नेतृत्व में ग्वालियर रेजीमेंट के विद्रोही सैनिकों ने कानपुर पर भी कब्ज़ा कर लिया, लेकिन दिसंबर 1857 में सर कोलीन कैंपबेल ने कानपुर पर पुन: अधिकार कर लिया।

केंद्र	नेतृत्वकर्त्ता
लखनऊ	बेगम हज़रत महल
कानपुर	नाना साहब (मुख्य संचालक तात्या टोपे)
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई
बरेली	खान बहादुर खान
इलाहाबाद	लियाकत अली
फैज़ाबाद	मौलवी अहमदुल्लाह शाह
काल्पी	तात्या टोपे
मथुरा	देवी सिंह
मेरठ	कदम सिंह
बड़ौत परगना (बागपत जिला)	शाहमल
गोरखपुर	गजाधर सिंह

  - ◆ कानपुर पर विद्रोहियों का अधिकार होने के बाद बंदी अंग्रेज़ स्त्रियों व बच्चों की हत्या के लिये उकसाने वाली महिला अजीजन बेगम थीं।
  - ◆ अजीमुल्ला खाँ नाना साहब के सलाहकार थे।
- **झाँसी:** रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी में विद्रोह की कमान सँभाली। वस्तुत: लॉर्ड डलहौज़ी ने विलय की नीति के तहत इनके राज्य को छीन लिया था। एक दुरूह संघर्ष के बाद ही अप्रैल 1858 में सर ह्यूरोज ने झाँसी पर पुन: कब्ज़ा करने में असफलता प्राप्त की। 17 जून, 1858 को रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई। अपने दुर्जेय शत्रु के बारे में सर ह्यूरोज ने कहा था कि "यहाँ वह औरत सोई हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।"

अध्याय
5

उत्तर प्रदेश : भौगोलिक स्थिति व भौतिक संरचना (Uttar Pradesh : Geographical Status and Physical Structure)

भारत के उत्तर में अवस्थित उत्तर प्रदेश राज्य गंगा के मैदान का एक उपजाऊ क्षेत्र है। यह उत्तर में हिमालय की तलहटी और दक्षिण में विंध्य श्रेणी को छूता है। उत्तर प्रदेश की भू-आकृति को सामान्यतया गंगा के मध्यवर्ती मैदान एवं दक्षिणी उच्च भूमि के रूप में विभाजित किया जाता है। उत्तर प्रदेश के मैदान, पर्वत-पहाड़ एवं पठार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें सर्वाधिक मैदानों का है। उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में पर्वत-पहाड़ स्थित है।

5.1 स्थिति एवं विस्तार *(Status and expansion)*

- उत्तर प्रदेश 23°52' उत्तरी अक्षांश से 31°28' उत्तरी अक्षांश तथा 77°51' पूर्वी देशांतर से 84°38' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।
- राज्य का कुल क्षेत्रफल 2, 40, 928 वर्ग किलोमीटर है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 7.33 प्रतिशत है। राज्य का पूर्व से पश्चिम तक का विस्तार 650 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण तक का विस्तार 240 किमी. है।
- भारत की मानक याम्योत्तर 82°30' पूर्वी देशांतर रेखा उत्तर प्रदेश के नैनी (इलाहाबाद) से होकर गुज़रती है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र के बाद देश का चौथा सबसे बड़ा राज्य है।
- प्रदेश की सीमा 8 राज्यों (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड) व 1 केंद्रशासित प्रदेश (दिल्ली) को (कुल 9 राज्यों) स्पर्श करती है।
- उत्तर प्रदेश नेपाल के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा को साझा करता है।
- राज्य के उत्तर में नेपाल तथा उत्तराखंड, उत्तर-पश्चिम में हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान, दक्षिण में मध्य प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में छत्तीसगढ़ तथा पूर्व में बिहार एवं झारखंड स्थित हैं।

उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती राज्यों से जुड़े ज़िले

सीमावर्ती राज्य	संख्या	ज़िला
हिमाचल प्रदेश	1	सहारनपुर
उत्तराखंड	7	सहारनपुर, मुज़फ्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत
हरियाणा	6	सहारनपुर, शामली, बागपत, गौतमबुद्ध नगर, अलीगढ़, मथुरा
दिल्ली	2	गाज़ियाबाद, गौतमबुद्ध नगर
राजस्थान	2	आगरा, मथुरा
मध्य प्रदेश	11	आगरा, इटावा, जालौन, झाँसी, ललितपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट, इलाहाबाद, मिर्ज़ापुर, सोनभद्र
छत्तीसगढ़	1	सोनभद्र
झारखंड	1	सोनभद्र
बिहार	7	सोनभद्र, चंदौली, गाज़ीपुर, बलिया, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज

उत्तर प्रदेश की सीमा से लगे राज्य और उनके ज़िले

सीमावर्ती राज्य	संख्या
उत्तराखंड (5 ज़िले)	देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी, नैनीताल, उधम सिंह नगर
हिमाचल प्रदेश (1 ज़िला)	सीमापुर

अध्याय
6

उत्तर प्रदेश : जलवायु एवं मृदा
(Uttar Pradesh : Climate and Soil)

"किसी क्षेत्र विशेष की दीर्घकालीन मौसमी दशाओं को समग्र रूप में जलवायु कहते हैं।"

वृहद् क्षेत्रफल वाला राज्य होने के कारण उत्तर प्रदेश में भौगोलिक विषमताओं, जैसे- विभिन्न स्थानों की समुद्र तल से ऊँचाई एवं दूरी, स्थल खंडों की विशालता, धरातलीय विविधता, प्राकृतिक वनस्पतियों की विविधता इत्यादि के कारण प्रदेश में क्षेत्रानुसार जलवायु संबंधी भिन्नता पाई जाती है। सामान्यत: प्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय व मानसूनी है।

6.1 जलवायु क्षेत्र *(Climate Zone)*

तापमान संबंधी न्यून विविधता के कारण उत्तर प्रदेश के जलवायु क्षेत्रों को वर्षा के आधार पर विभाजित किया गया है। वर्षा के वितरण के आधार पर उत्तर प्रदेश को दो जलवायु क्षेत्रों में बाँटा गया है–

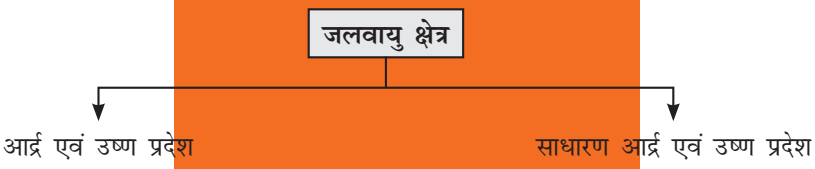

1. आर्द्र एवं उष्ण प्रदेश

इस प्रदेश के अंतर्गत बिजनौर, उत्तरी मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थ नगर, महराजगंज, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, बस्ती, उत्तरी शाहजहाँपुर, सीतापुर, बाराबंकी, फैज़ाबाद, आज़मगढ़, बलिया, गाज़ीपुर, जौनपुर, वाराणसी, मिर्ज़ापुर आदि ज़िले आते हैं। इस प्रदेश को दो उप-विभागों में बाँटा गया है-

(i) तराई क्षेत्र (ii) पूर्वी उत्तर प्रदेश

तराई क्षेत्र

- तराई क्षेत्र में बिजनौर, उत्तरी मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, बस्ती, देवरिया, बलरामपुर, सिद्धार्थ नगर, कुशीनगर, महराजगंज आदि ज़िलों को शामिल किया जाता है।
- इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 120 सेमी. से 180 सेमी. तक होती है।
- इन क्षेत्रों में जनवरी में औसत तापमान 18°C और जुलाई में औसत तापमान 30°C रहता है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश

- इस क्षेत्र में मिर्ज़ापुर, इलाहाबाद, वाराणसी, जौनपुर, गाज़ीपुर, बलिया, आज़मगढ़, फैज़ाबाद, बाराबंकी, सीतापुर, उत्तरी शाहजहाँपुर आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- इस क्षेत्र में औसत वर्षा 100 सेमी. से 120 सेमी. होती है।

2. साधारण आर्द्र एवं उष्ण प्रदेश

प्रदेश के मध्य मैदानी क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र तथा बुंदेलखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा की असमान मात्रा देखने को मिलती है। इन क्षेत्रों में 80 सेमी. से 100 सेमी. तक वर्षा होती है। वर्षा की असमान मात्रा के आधार पर साधारण आर्द्र एवं उष्ण प्रदेश को तीन उप-विभागों में बाँटा गया है-

(i) मध्यवर्ती मैदानी क्षेत्र (ii) पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (iii) बुंदेलखंड का पहाड़ी व पठारी क्षेत्र

अध्याय
7

उत्तर प्रदेश : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई
(Uttar Pradesh : Drainage System and Irrigation)

नदियाँ कृषि-प्रधान राज्य की जीवन रेखा कहलाती हैं क्योंकि ये क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। राज्य के विभिन्न भागों में अनेक नदियाँ बहती हैं। इन नदियों के अपवाह तंत्र के निर्धारण में राज्य की धरातलीय संरचना, ढाल एवं जल की प्राप्ति का विशेष योगदान है। विशाल मैदानी प्रदेश होने के कारण राज्य के मैदानी भाग में 'समानांतर अपवाह तंत्र' पाया जाता है। उत्तर प्रदेश में सिंचाई का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह एक कृषि-प्रधान राज्य है। वर्षा की अनिश्चितता के कारण उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार से सिंचाई व्यवस्था की गई है।

7.1 अपवाह तंत्र *(Drainage System)*

उत्तर प्रदेश की प्रकृति और विशेषताओं के आधार पर अपवाह तंत्र को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जाता है–

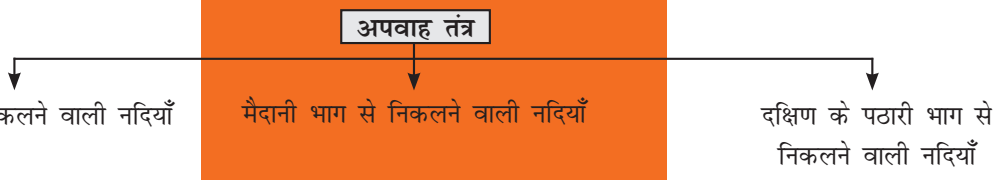

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ

- इनमें गंगा, यमुना, गंडक, घाघरा, काली (शारदा), रामगंगा, राप्ती आदि सदानीरा नदियाँ प्रमुख हैं।
- गंगा का उद्गम गंगोत्री, यमुना का यमुनोत्री, गंडक का उद्गम महान हिमालय तथा काली का उद्गम पूर्वोत्तर कुमाऊँ हिमालय के मिलाम हिमनद से होता है। रामगंगा और राप्ती नदियों का उद्गम लघु हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से होता है।

मैदानी भाग से निकलने वाली नदियाँ

- इनमें गोमती, वरुणा, पांडो, सई, ईशन आदि नदियाँ प्रमुख हैं।
- इन नदियों का उद्गम मैदानी भाग में स्थित विभिन्न झीलों तथा दलदली क्षेत्रों से होता है।

दक्षिण के पठारी भाग से निकलने वाली नदियाँ

- दक्षिण के पठारी भाग की नदियों में चंबल, बेतवा, धसान, केन, सोन, रिहंद, कन्हार आदि प्रमुख हैं।

उत्तर प्रदेश की प्रमुख नदियाँ *(Major rivers of Uttar Pradesh)*

प्रदेश में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ निम्नलिखित हैं–

गंगा नदी

- गंगा उत्तर प्रदेश की प्रमुख नदियों में से एक है जो प्रदेश की प्राकृतिक संपदा के साथ ही यहाँ के लोगों की भावनात्मक आस्था का भी आधार है।
- इसकी उत्पत्ति केदारनाथ चोटी के पास गंगोत्री हिमनद के गोमुख नामक स्थान से होती है। इसे यहाँ भागीरथी के नाम से जाना जाता है।
- देव प्रयाग नामक स्थान पर अलकनंदा नदी भागीरथी से मिलती है। भागीरथी व अलकनंदा की सम्मिलित जलधारा ही आगे गंगा के नाम से प्रवाहित होती है।
- शिवालिक पहाड़ियों से उतरती हुई गंगा उत्तराखंड के हरिद्वार से मैदानी भाग में प्रवेश करती है। मैदानी भाग में गंगा अधिक चौड़ी हो जाती है।

अध्याय
8

उत्तर प्रदेश : कृषि व पशुपालन
(Uttar Pradesh : Agriculture & Animal Husbandry)

उत्तर प्रदेश कृषि एवं पशुपालन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण राज्य है क्योंकि यहाँ की भौगोलिक संरचना कृषि एवं पशुपालन के अनुकूल है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है तथा लगभग 65% जनसंख्या कृषि पर आधारित है। वर्ष 2014-15 के आँकड़ों के अनुसार प्रदेश में लगभग 165.98 लाख हेक्टेयर (68.7%) क्षेत्र में खेती की जाती है। उत्तर प्रदेश पशुपालन की दृष्टि से भारत में एक संपन्न राज्य के रूप में जाना जाता है।

8.1 कृषि *(Agriculture)*

उत्तर प्रदेश में कृषि का योगदान उसकी अर्थव्यवस्था में हमेशा अच्छा रहा है। यहाँ के अधिकांश लोग कृषि व्यवस्था पर ही आश्रित हैं।

कृषि प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। प्रदेश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने, जनता को खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्रदान करने, राज्य को राष्ट्र के खाद्य भंडार के रूप में संपन्न बनाने तथा ग्रामीण जनता को आर्थिक उन्नति एवं संपन्नता सुनिश्चित कर ग्राम्य जीवन में गुणवत्तायुक्त सुधार लाने के लिये कृषि नीति के अंतर्गत प्रदेश शासन द्वारा सप्तक्रांति-प्रसार, सिंचाई एवं जल प्रबंधन, विपणन, मशीनीकरण एवं शोध तथा कृषि विविधीकरण पर विशेष बल दिये जाने का संकल्प लिया गया। वर्ष 2016-17 में प्रचलित भावों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संवर्गीय क्षेत्र का योगदान 26.5% रहा जिसमें कृषीय फसलों का योगदान 17.6% रहा।

- वर्ष 2015-16 में स्थायी भावों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संवर्गीय क्षेत्र की वार्षिक वृद्धि दर 4.2% थी जो कि वर्ष 2016-17 में 8.9% हो गई है।
- इसी प्रकार फसलों की वृद्धि दर जो कि वर्ष 2015-16 में 4.9% थी, वर्ष 2016-17 में 12.2% हो गई।

कृषि में कार्यरत कर्मकरों की स्थिति *(Status of workers of employed in agriculture)*

वर्ष 2011 की जनगणनानुसार उत्तर प्रदेश में कुल 658.15 लाख कर्मकर थे, जिसमें 190.58 लाख कृषक एवं 199.39 लाख कृषि श्रमिक थे। कुल कर्मकरों में कृषकों एवं कृषि श्रमिकों का प्रतिशत अंश 59.3 था।

उत्तर प्रदेश में कुल कर्मकरों की संख्या तथा उनका प्रतिशत वितरण

मद	इकाई	कर्मकरों की संख्या		कर्मकरों का प्रतिशत	
		2001	2011	2001	2011
1. कृषक	लाख	221.68	190.58	41.1	29.0
2. कृषि श्रमिक	लाख	134.01	199.39	24.8	30.3
3. पारिवारिक उद्योग	लाख	30.31	38.99	5.6	5.9
4. अन्य	लाख	153.84	229.19	28.5	34.8
योग		**539.84**	**658.15**	**100.0**	**100.0**

स्त्रोत : उत्तर प्रदेश आर्थिक समीक्षा (2016-17)

- वर्ष 2011-12 के भू-उपयोग सांख्यिकी के अनुसार प्रदेश का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 241.70 लाख हेक्टेयर है जिसमें से 166.23 लाख हेक्टेयर (68.8%) क्षेत्र शुद्ध बुआई का क्षेत्र है और 154.77 फसल सघनता के साथ सकल बुआई क्षेत्र 257.28 लाख हेक्टेयर है।
- प्रदेश में वर्ष 2013-14 में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 165.46 लाख हेक्टेयर था जो वर्ष 2014-15 में 0.31% बढ़कर 165.98 लाख हेक्टेयर हो गया।

अध्याय
9

उत्तर प्रदेश : वन एवं वन्यजीव अभयारण्य
(Uttar Pradesh : Forest and Wildlife Sanctuary)

प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता किसी भी देश अथवा राज्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। प्राकृतिक संसाधनों में वनों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि वनों से अनेक बहुमूल्य लकड़ी एवं औषधियाँ प्राप्त होती हैं। उत्तर प्रदेश के विकास में भी वनों का काफी योगदान है। उत्तर प्रदेश में मुख्यत: उष्णकटिबंधीय वन का विस्तार अधिक है। लेकिन यहाँ की भौगोलिक संरचना में काफी विभिन्नताएँ हैं इसलिये यहाँ पर वनों के रूप में भी भिन्नता पाई जाती है तथा उत्तर प्रदेश के इन वनों में अनेक वन्यजीव पाए जाते हैं, जैसे- चीता, बाघ, तेंदुआ, गीदड़, खरगोश, लोमड़ी, गिलहरी, बगुला, कबूतर, सारस, तीतर, मैना, बुलबुल, तोता इत्यादि।

वन *(Forest)*

सामान्यतया उत्तर प्रदेश में तीन प्रकार के वन पाए जाते हैं-

वनों के प्रकार	
प्रकार	**विशेषताएँ**
उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन	● इस प्रकार के वन उत्तर प्रदेश के भाँबर तथा तराई क्षेत्र में पाए जाते हैं। ● सामान्यतया इस प्रकार के वन 100–150 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ● इस प्रकार के वन की सर्वप्रमुख प्रजाति सागौन है। ● अन्य प्रमुख वन हैं- सागवान, कुसुम, शीशम, महुआ, साल, शहतूत, जामुन, बाँस, बेंत, सखुआ इत्यादि। ● सखुआ, शीशम एवं सागवान आर्थिक दृष्टिकोण से अधिक महत्त्वपूर्ण वन हैं।
उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन	● यह वन उत्तर प्रदेश के पूर्व एवं मध्य तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। जहाँ लगभग 70–100 सेमी. तक वर्षा होती है। ● इन वन क्षेत्रों में ऊँचे वृक्षों का अभाव पाया जाता है। ● इस प्रकार के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वन साल के हैं। ● अन्य प्रमुख वन हैं- नीम, आम, पीपल, ऑक्सवुड, अमलताश, पलाश, तेंदू इत्यादि। ● इस प्रकार के वन क्षेत्र की प्रमुख समस्या अत्यधिक चराई है।
उष्णकटिबंधीय काँटेदार वन	● सामान्यतया इस प्रकार के वन उत्तर प्रदेश के दक्षिणी क्षेत्रों में विस्तृत हैं। ● इस प्रकार के वन वहाँ पाए जाते हैं जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 50 से 75 सेमी. होती है। ● इस प्रकार के वन की ऊँचाई 5–10 मीटर तक होती है। ● इस प्रकार के प्रमुख वन हैं- खैर, बबूल, कीकर, खजूर, यूफोबिया, धामन, थोर, खेजड़ी, अकासिया इत्यादि।

उत्तर प्रदेश में वन स्थिति *(Forest Status in Uttar Pradesh)*

- वन के विकास के लिये भारत सरकार ने राष्ट्रीय वन नीति, 1998 की घोषणा की। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसी तर्ज पर दिसंबर 1998 में राज्य वन नीति की घोषणा की।
- राज्य वन नीति 1998 के आधार पर प्रदेश के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल के 33.33 प्रतिशत भाग वनाच्छादित होना चाहिये।

वन स्थिति रिपोर्ट, 2017

- वन स्थिति रिपोर्ट, 2017 के आधार पर उत्तर प्रदेश का 240928 वर्ग किमी. भौगोलिक क्षेत्रफल है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 7.33% है।

अध्याय
10

उत्तर प्रदेश : खनिज संसाधन
(Uttar Pradesh : Mineral Resources)

उत्तर प्रदेश में बुंदेलखंड क्षेत्रों, हिमालय श्रेणी के निम्न भागों एवं विंध्यक्रम श्रेणी में खनिज पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ नदी घाटियों में भी खनिज पाए जाते हैं। उत्तर प्रदेश में खनिज संसाधन की खोज, विकास एवं उद्योगों की स्थापना के लिये वर्ष 1955 में सर्वप्रथम भू-तत्त्व एवं खनिकर्म निदेशालय की स्थापना की गई। इसके पश्चात् 1974 में उत्तर प्रदेश राज्य खनिज विकास निगम की स्थापना की गई। इसके माध्यम से नए-नए खनिज संसाधनों की खोज करके उससे संबंधित उद्योग स्थापित किये गए। दिसंबर 1998 में उत्तर प्रदेश में प्रथम खनिज नीति घोषित की गई, इसके अंतर्गत खनिज विकास को उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया। इस नीति द्वारा उत्तर प्रदेश के 10 ज़िलों- सहारनपुर, इलाहाबाद, मिर्ज़ापुर, झाँसी, महोबा, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, सोनभद्र को खनिज विकास बहुल क्षेत्र घोषित किया गया। उत्तर प्रदेश में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज हैं- चूना पत्थर, सॉफ्टस्टोन, मैग्नेसाइट, जिप्सम, तांबा, ग्लाड-सैंड, संगमरमर, नॉन-प्लास्टिक, फायर क्ले, यूरेनियम, एंडलुसाइट, वेराइट्स इत्यादि। वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार ने खनन नीति 2017 की घोषणा की।

उत्तर प्रदेश खनन नीति, 2017 *(Uttar Pradesh Mining Policy, 2017)*

- 30 मई, 2017 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सुशासन एवं भ्रष्टाचार मुक्त मूल मंत्रों पर आधारित एक मज़बूत तथा पारदर्शी खनन नीति को मंज़ूरी प्रदान की गई।
- इस खनन नीति के निम्नलिखित प्रमुख मंत्र हैं-
  - पारदर्शिता
  - समता
  - आम सहमति
  - भागीदारी
  - कानून का राज
  - प्रभावी
  - उत्तरदायी
- इस नीति के निम्नलिखित प्रमुख लक्ष्य हैं-
  - खनिजों के विषय में जागरूकता को बढ़ावा देना।
  - सर्वसामान्य की खान एवं खनिजों तक पहुँच।
  - सर्वसामान्य की खनिजों की उपलब्धता में वृद्धि करना।
  - खनिजों का मूल्य जनसाधारण के सामर्थ्य के अनुसार रखना।
  - उपरोक्त के आधार पर जनसाधारण में खनिजों की स्वीकार्यता।
- इस खनन नीति के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-
  - खानों एवं खनिजों के माध्यम से प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक सतत् विकास में वृद्धि करना।
  - खनिजों के संरक्षण पर अधिक ध्यान देना।
  - पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी का संतुलन बनाए रखना।
  - खनिजों से प्राप्त होने वाले राजस्व का राज्य के कुल राजस्व प्राप्ति के अंश 1.85% को बढ़ाकर आगामी 5 वर्षों में 3% किया जाना।
  - अवैध खनन/परिवहन पर नियंत्रण हेतु तकनीकी हस्तक्षेप तथा अवैध खनन एवं परिवहन में लिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध कठोर दंड की कार्रवाई करना।
  - खनिज सेक्टर में रोज़गार के अवसर को बढ़ावा देना।
  - खनिज उद्योग में स्वच्छ प्रतिस्पर्द्धा को प्रोत्साहन देना।
  - खनिजों के वैज्ञानिक विकास, जिसमें खनिजों की उपयोगिता, विपणन, मानव संसाधन सम्मिलित हैं, हेतु तकनीकी ज्ञान एवं सुविधाएँ तथा परामर्श उपलब्ध कराना।
  - इच्छुक उद्यमियों को खनिज आधारित सूचना/आँकड़ों को उपलब्ध कराना।
  - खनिज विकास प्रक्रिया में निजी पूंजी निवेश को प्रोत्साहन और उद्यमिता का विकास करना।
  - खनिज विकास हेतु आधुनिक अन्वेषण तकनीक के माध्यम से नए खजिन भंडारों के अन्वेषण में तीव्रता प्रदान करना।

अध्याय
11

उत्तर प्रदेश : अर्थव्यवस्था एवं औद्योगीकरण
(Uttar Pradesh : Economy and Industrialization)

भारत के गढ़ के रूप में वर्णित उत्तर प्रदेश 2,40,928 वर्ग किमी. में विस्तृत है। इसमें 18 मंडल, 75 ज़िले एवं 821 सामुदायिक विकास ब्लॉक हैं। देश के भौगोलिक क्षेत्र के 7.3 प्रतिशत क्षेत्र को आवरित करने वाला उत्तर प्रदेश, देश में चौथा सबसे बड़ा राज्य है। राज्य की जनसंख्या 19.98 करोड़ है (जनगणना 2011 के अनुसार), जो भारत की आबादी का लगभग 16.5% है एवं भारत के सभी राज्यों में सबसे अधिक है। वर्ष 2015-16 में 11,45,234 करोड़ रुपए के जीएसडीपी के साथ उत्तर प्रदेश भारत की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जो देश की अर्थव्यवस्था में 8.4% का योगदान करती है। उत्तर प्रदेश भारत में शीर्ष विनिर्माण स्थलों में से एक है, जो राष्ट्रीय विनिर्माण उत्पादन में 8 प्रतिशत से अधिक का योगदान करता है।

11.1 उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था *(Economy of Uttar Pradesh)*

- उत्तर प्रदेश द्वारा राज्य आय के वर्ष 2016-17 के जारी त्वरित अनुमान के अनुसार वर्ष 2016-17 में स्थिर (2011-12) भावों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) की वृद्धि दर 7.2% रही है।
- वर्ष 2016-17 में स्थिर (2011-12) भावों पर सकल राज्य घरेलू मूल्यवर्धन (जीएसवीए) में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों की वृद्धि दर क्रमशः 10.4%, 4.0%, 7.5% रही है।
- प्रचलित भावों पर निवल राज्य घरेलू उत्पाद (एनएसडीपी) के संदर्भ में वर्ष 2016-17 की प्रति व्यक्ति आय 50203 रुपए आकलित हुई है, जो गत वर्ष से 8.5% की वृद्धि दर को दर्शाता है।
- वर्ष 2016-17 में प्रचलित भावों पर सकल राज्य मूल्यवर्धन (जीएसवीए) का खंडवार वितरण इस प्रकार है–

प्राथमिक क्षेत्र	द्वितीयक क्षेत्र	तृतीयक क्षेत्र
27.9%	23.2%	48.9%

सकल राज्य मूल्यवर्धन (स्थायी भावों पर)

- आधार वर्ष 2011-12 पर जारी वर्ष 2016-17 के त्वरित अनुमानों के अनुसार बुनियादी मूल्यों पर सकल राज्य मूल्यवर्धन वर्ष 2016-17 में 898546 करोड़ रुपए रहा है, जो 7.4% की वृद्धि दर को दर्शाता है।
- सकल राज्य मूल्यवर्धन में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों की वृद्धि दर वर्ष 2016-17 में 10.4%, 4.0% तथा 7.5% रही है।

क्षेत्रवार विश्लेषण *(Sector-wise Analysis)*

प्राथमिक क्षेत्र

इसके अंतर्गत कृषि, वानिकी एवं मत्स्यन तथा खनन और उत्खनन उपक्षेत्र शामिल हैं। नवीन शृंखला में प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत फसल तथा पशुपालन के अनुमान पृथक्-पृथक् आकलित किये गए हैं, जबकि पुरानी शृंखला में यह कृषि तथा संवर्गीय क्षेत्र के अंतर्गत एक साथ आकलित किये जाते थे।

- प्रदेश के सकल मूल्यवर्धन में फसल उपक्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2016-17 में 12.2% की वृद्धि हुई है।
- प्रदेश के सकल राज्य मूल्यवर्धन में पशुपालन उपक्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2016-17 में 2.3% वृद्धि हुई है।
- प्रदेश के सकल मूल्यवर्धन में वन उद्योग तथा लट्ठे बनाने के उपक्षेत्र में वर्ष 2016-17 में 0.2% की वृद्धि हुई है।
- प्रदेश के सकल मूल्यवर्धन में मत्स्य उपक्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2016-17 में 22.4% की वृद्धि हुई है।
- प्रदेश के सकल मूल्यवर्धन में खनन एवं पत्थर निकालना जैसे उपक्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2016-17 में 35.1% की वृद्धि हुई है।

अध्याय
12

उत्तर प्रदेश : ऊर्जा संसाधन
(Uttar Pradesh : Energy Resources)

ऐसे संसाधन जिनका उपयोग ऊर्जा को उत्पन्न करने के लिये किया जाता है, ऊर्जा संसाधन कहलाते हैं। उदाहरण- कोयला, पेट्रोलियम आदि। किसी भी प्रदेश का सर्वांगीण विकास ऊर्जा की उपलब्धता पर निर्भर करता है। उत्तर प्रदेश में ऊर्जा संसाधन के दो प्रमुख स्रोत रहे हैं- पारंपरिक स्रोत एवं गैर-पारंपरिक स्रोत।

पारंपरिक स्रोत: पारंपरिक या परंपरागत ऊर्जा संसाधन वे होते हैं जिनका पूर्ण उपयोग नहीं किया जा सकता है अर्थात् इनको एक बार उपयोग में लेने के बाद पुन: प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है। उदाहरण- कोयला, पेट्रोलियम आदि।

गैर-पारंपरिक स्रोत: ऊर्जा के ऐसे संसाधन जिनका कम समय में ही पुन: नवीकरण कर सकते हैं। उदाहरण- हवा, जल, सौर ऊर्जा, भू-तापीय ऊर्जा।

- आज़ादी के वक्त से प्रदेश का पावर सेक्टर काफी तेज़ी से आगे बढ़ा है, जिसके कारण राज्य में कृषि एवं उद्योग सेक्टर का भी काफी तेज़ी से विकास संभव हो सका है।
- राज्य में वर्ष 1959 में उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद का गठन किया गया। राज्य में वर्ष 1959 में स्थापित क्षमता 264 मेगावाट थी।
- विद्युत सुधारों के रूप में पहला कदम 1998 में उठाया गया, जब केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग अधिनियम, 1998 के अंतर्गत शुल्कों के स्वतंत्रतापूर्वक निर्धारण हेतु 'उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग' का गठन किया गया।
- इसके बाद राज्य में विद्युत सुधार के लिये उत्तर प्रदेश विद्युत सुधार अधिनियम, 1999 लागू किया गया। जिसमें राज्य विद्युत परिषद की समस्त कार्रवाइयों को निम्नलिखित निगमों में बाँट दिया गया, जो इस प्रकार हैं-

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड *(UPRVUNL)*

- यह निगम तापीय विद्युत उत्पादन के लिये कार्यरत है। राज्य क्षेत्र में नई थर्मल पावर परियोजनाओं के निर्माण के लिये उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड का गठन कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत 25 अगस्त, 1980 को किया गया था।
- इस निगम द्वारा निर्मित पहला थर्मल पावर स्टेशन 2× 210 मेगावाट क्षमता का ऊँचाहार थर्मल पावर स्टेशन था और इसे 13 फरवरी, 1992 को एनटीपीसी में स्थानांतरित कर दिया गया था।
- उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत सुधार अधिनियम, 1999 तथा उत्तर प्रदेश स्थानांतरण योजना, 2000 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद को राज्य के 3 सरकारी उपक्रमों में विभाजित कर दिया गया जिसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड, उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड तथा उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड का गठन क्रमश: विद्युत उत्पादन, विद्युत वितरण तथा विद्युत पारेषण हेतु किया गया। तत्पश्चात् राज्य के ताप विद्युत गृहों का संचालन उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड को हस्तांतरित कर दिया गया।
- वर्तमान में उत्तर प्रदेश के अंदर 4 थर्मल पावर स्टेशनों का संचालन उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम द्वारा किया जा रहा है। यह 5474 मेगावाट की वर्तमान उत्पादन क्षमता के साथ पूर्ण स्वामित्व वाली संस्था के रूप में कार्यरत है।
- इस निगम के अंतर्गत 4 ताप विद्युत गृह कार्यरत हैं, जो इस प्रकार हैं-

ताप विद्युत परियोजना *(Thermal Power Project)*

अनपरा ताप विद्युत गृह

यह ताप विद्युत गृह सोनभद्र ज़िले में रिहंद जलाशय के तट पर अनपरा गाँव के समीप स्थित है। यह पीपरी-सिंगरौली रोड पर रिहंद बांध से लगभग 34 किमी. और वाराणसी से लगभग 200 किमी. दूर है।

अध्याय
13

उत्तर प्रदेश : परिवहन एवं संचार
(Uttar Pradesh : Transport and Communication)

प्रदेश में अधोसंरचनात्मक सुविधाओं की दृष्टि से यातायात मार्गों एवं परिवहन संसाधनों का विशेष महत्त्व है। आवागमन हेतु राज्य में सड़कों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। परिवहन साधनों का महत्त्व किसी प्रदेश के विकास के लिये उतना ही होता है जितना शरीर में रक्त धमनियों का होता है। राज्य में खनिज, वनोपज, कृषि उपज, उपभोक्ता वस्तुएँ एवं जनसामान्य को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने के लिये सड़क, रेल, वायु एवं जलमार्गों का होना आवश्यक है। राज्य में परिवहन एवं संचार व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं उपयोगी बनाने की दृष्टि से सड़क मार्गों, रेल मार्गों, वायु मार्गों, जल मार्गों एवं मेट्रो रेल के विकास पर अधिक बल दिया जा रहा है।

13.1 परिवहन *(Transport)*

परिवहन एवं व्यापार संबंधी क्रियाकलापों का विकास एवं विस्तार सड़कों के विकास पर भी निर्भर करता है। कृषि एवं औद्योगिक विकास में सड़क एवं संचार जैसी अवस्थापनाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। कच्चे मालों की आपूर्ति तथा निर्मित उत्पादों के विपणन के लिये परिवहन का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। उत्तर प्रदेश में परिवहन के तीन मुख्य (सड़क, रेल, वायु) और एक गौण साधन (जल) है।

सड़क परिवहन *(Road Transport)*

सड़क नेटवर्क अर्थव्यवस्था के निरंतर और समावेशी विकास के लिये महत्त्वपूर्ण घटक है। यह देश भर में यात्री की आवाजाही और माल ढुलाई की सुविधा प्रदान करता है। परिवहन के विभिन्न साधनों के बीच सड़क परिवहन अपनी लास्टमाइल कनेक्टीविटी की भूमिका की वजह से महत्त्वपूर्ण है। पिछले कुछ वर्षों में परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में भारत में यात्री और माल की आवाजाही तेज़ी से सड़क परिवहन क्षेत्र की ओर स्थानांतरित हुई है।

प्रदेश के विकास के लिये अवस्थापना सुविधाओं को उपलब्ध कराने में मार्गों एवं सेतुओं की भी विशेष भूमिका है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अनुसार उत्तर प्रदेश में रा.रा. (राष्ट्रीय राजमार्ग) की कुल लंबाई 8483.00 किमी. है जो इस संदर्भ में देश में प्रथम है। कुल लंबाई में से 4529 किमी. राष्ट्रीय राजमार्ग भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) के अधीन है। उत्तर प्रदेश में लोक निर्माण विभाग द्वारा संधृत मार्गों की कुल लंबाई संबंधी आँकड़े इस प्रकार हैं–

रोड नेटवर्क की स्थिति

क्रम सं.	मार्ग का वर्गीकरण	31.3.14 तक	31.3.15 तक	31.3.16 तक	31.3.17 तक
1.	राष्ट्रीय मार्ग (किमी.)	7550	7572	7572	7633
2.	राज्य मार्ग (किमी.)	7543	7597	7147	7202
3.	प्रमुख ज़िला मार्ग (किमी.)	7338	7338	7637	7486
4.	अन्य ज़िला मार्ग (किमी.)	42434	43512	46006	47576
5.	ग्रामीण मार्ग (किमी.)	141593	149193	163035	169051
	योग	**206458**	**215212**	**231397**	**238948**

स्रोत: लोक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश

अध्याय
14

उत्तर प्रदेश : जनगणना-2011
(Uttar Pradesh : Census–2011)

2011 की जनगणना देश की 15वीं जनगणना है तथा स्वतंत्र भारत की 7वीं जनगणना है। जनगणना संघ सूची का विषय है। जनगणना प्राचीन काल से होती आ रही है तथा अबुल फजल द्वारा रचित 'आइने अकबरी' में भी जनगणना का उल्लेख किया गया है। ब्रिटिश भारत में 1872 ई. में लॉर्ड मेयो के कार्यकाल में पहली जनगणना हुई तथा 1881 में लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में इसने निरंतरता प्राप्त की। भारत सरकार द्वारा इस परंपरा को जारी रखते हुए प्रत्येक 10 वर्ष के अंतराल पर देश में जनगणना कराई जाती है।

कुल जनसंख्या

- 2011 की जनगणना के आधार पर उत्तर प्रदेश जनसंख्या के मामले में प्रथम स्थान पर है।
- प्रदेश की कुल जनसंख्या – 19,98,12,341
  पुरुष जनसंख्या – 10,44,80,510 (52.28%)
  महिला जनसंख्या – 9,5,331,831 (47.72% या लगभग 48%)
- 2001 में प्रदेश की आबादी देश की कुल आबादी के 16.16% थी, जो 2011 में बढ़कर 16.50% हो गई।
- जनगणना 2011 में राज्य की कुल ग्रामीण जनसंख्या– 15, 53, 17, 278 (77.70%) व नगरीय जनसंख्या – 4,44,95,063 (22.30%)
- राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वाला ज़िला– इलाहाबाद
- राज्य में सबसे कम जनसंख्या वाला ज़िला – महोबा

प्रदेश के सर्वाधिक जनसंख्या वाले ज़िले

क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या
1.	इलाहाबाद	59,54,391
2.	मुरादाबाद	47,72,006
3.	गाज़ियाबाद	46,81,645
4.	आज़मगढ़	46,13,913
5.	लखनऊ	45,89,838

प्रदेश के न्यूनतम जनसंख्या वाले ज़िले

क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या
1.	महोबा	8,75,958
2.	चित्रकूट	9,91,730
3.	हमीरपुर	11,04,285
4.	श्रावस्ती	11,17,361
5.	ललितपुर	12,21,592

प्रदेश में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले ज़िले

क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या
1.	इलाहाबाद	44,81,518
2.	आज़मगढ़	42,20,512
3.	जौनपुर	41,47,624
4.	सीतापुर	39,53,208
5.	गोरखपुर	36,04,766

प्रदेश के सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वाले ज़िले

क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या
1.	गाज़ियाबाद	31,62,547
2.	लखनऊ	30,38,996
3.	कानपुर नगर	30,15,645
4.	आगरा	20,24,195
5.	मेरठ	17,59,182

प्रदेश के सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या प्रतिशत वाले ज़िले

क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या (प्रतिशत में)
1.	गाज़ियाबाद	67.6%
2.	लखनऊ	66.2%
3.	कानपुर नगर	65.8%
4.	गौतम बुद्ध नगर	59.1%
5.	मेरठ	51.1%

प्रदेश के न्यूनतम नगरीय जनसंख्या प्रतिशत वाले ज़िले

क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या (प्रतिशत में)
1.	श्रावस्ती	3.5%
2.	कुशीनगर	4.7%
3.	महाराजगंज	5.0%
4.	सुल्तानपुर	5.3%
5.	प्रतापगढ़	5.5%

अध्याय
15

उत्तर प्रदेश : राजव्यवस्था एवं प्रशासन
(Uttar Pradesh : Governance and Administration)

सन् 1950 से पहले उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रांत के नाम से जाना जाता था। देश में नए संविधान के लागू होने के साथ ही 24 जनवरी, 1950 को संयुक्त प्रांत का नाम बदलकर उत्तर प्रदेश रखा गया और इस प्रकार यह भारतीय संघ का एक नया राज्य बना। जनसंख्या की दृष्टि से यह भारत का सबसे बड़ा राज्य है।

राजव्यवस्था के सुदृढ़ रूप से संचालन हेतु राज्य प्रशासन को मुख्यत: तीन वर्गों में बाँटा गया है-

- विधायिका
- कार्यपालिका
- न्यायपालिका

15.1 उत्तर प्रदेश विधायिका/विधानमंडल *(Uttar Pradesh Legislature)*

भारतीय संविधान के अनुच्छेद- 168 के तहत प्रत्येक राज्य के लिये एक विधायिका/विधानमंडल की व्यवस्था की गई है। इसके अनुसार उत्तर प्रदेश विधानमंडल में राज्यपाल तथा दो सदन विधानपरिषद (उच्च सदन) तथा विधानसभा (निम्न सदन) शामिल हैं।

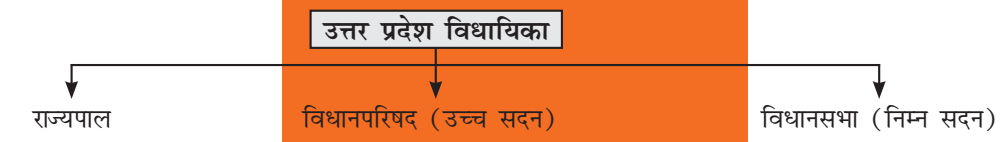

उत्तर प्रदेश विधानपरिषद

5 जनवरी, 1887 को संयुक्त प्रांत की प्रथम विधानपरिषद का स्वरूप एक सरकारी विज्ञप्ति के रूप में सामने आया। 8 जनवरी, 1887 को थार्नहिल मेमोरियल हॉल इलाहाबाद में विधानपरिषद की प्रथम बैठक हुई। प्रथम बार संयुक्त प्रांत में द्विसदनीय विधानमंडल का गठन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935 के अंतर्गत हुआ। इस प्रकार विधानपरिषद विधानमंडल का द्वितीय सदन बना। 1935 के अधिनियम में यह व्यवस्था की गई कि प्रत्येक विधानपरिषद एक स्थायी इकाई होगी, जो कि भंग नहीं होगी, किंतु प्रत्येक तीसरे वर्ष इसके एक-तिहाई सदस्य सदस्यता से निवृत्त होते जाएंगे।

पूर्व में विधानपरिषद का गठन सांप्रदायिक व अन्य प्रकार के हितों की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए उनके प्रतिनिधियों को विधानमंडल में रखने के उद्देश्यों से किया जाता रहा, परंतु 1950 में संविधान के अंतर्गत विधानपरिषद का गठन गुण, व्यवसाय व राजनीतिक प्रतिनिधित्व के आधार पर किया जाने लगा। संविधान के 7वें संशोधन अधिनियम, 1956 द्वारा यह प्रावधान किया गया कि विधानपरिषद की सदस्य संख्या विधानसभा का एक-तिहाई होगी। इस संशोधन के अनुसार 1958 में विधानपरिषद की सदस्य संख्या 108 कर दी गई। तब से विधान परिषद की सदस्य संख्या 108 ही रही, परंतु 8 नवंबर, 2000 से उत्तराखंड राज्य के अस्तित्व में आने से तथा विधानपरिषद के 8 सदस्यों के उत्तराखंड विधान सभा में चले जाने के कारण यहाँ की सदस्य संख्या 108 से घटकर 100 हो गई जो वर्तमान में भी है। वर्तमान में इसमें विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से 38, स्थानीय निकाय निर्वाचन क्षेत्र से 36, शिक्षक एवं स्नातक निर्वाचन क्षेत्रों से 8-8 तथा 10 सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत हैं।

उत्तर प्रदेश विधानपरिषद पर एक नज़र

- संविधान के अनुच्छेद-169 के तहत किसी राज्य में विधान परिषद् की स्थापना एवं समाप्ति का प्रावधान है।
- उत्तर प्रदेश विधानपरिषद एक स्थायी सदन है। इसकी वर्तमान सदस्य संख्या 100 है।
- सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से छ: वर्ष के लिये होता है तथा इसके 1/3 सदस्य प्रत्येक दो वर्ष में सदस्यता से निवृत्त हो जाते हैं।

अध्याय
16

उत्तर प्रदेश : पंचायती राज व्यवस्था
(Uttar Pradesh : Panchayati Raj System)

भारत के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ ऋग्वेद में 'सभा' एवं 'समिति' के रूप में लोकतांत्रिक स्वायत्तशासी संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। इतिहास में विभिन्न अवसरों पर केंद्र में राजनीतिक उथल-पुथल या सत्ता परिवर्तनों से निष्प्रभावित रहकर भी ग्रामीण स्तर पर ये स्वायत्तशासी इकाइयाँ पंचायतें आदि काल से निरंतर किसी न किसी रूप में कार्यरत रही हैं।

16.1 उत्तर प्रदेश में पंचायतों के विकास के विभिन्न चरण
(Various stages of Panchayats development in Uttar Pradesh)

पहला चरण (1947 से 1952–53)

- संयुक्त प्रांत पंचायत राज अधिनियम, 1947 दिनांक 7 दिसंबर, 1947 को गवर्नर जनरल द्वारा हस्ताक्षरित हुआ और प्रदेश में 15 अगस्त, 1949 को पंचायतों की स्थापना हुई।
- 15 अगस्त, 1949 से उत्तर प्रदेश की पाँच करोड़ चालीस लाख ग्रामीण जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली 35,000 पंचायतों ने कार्य करना प्रारंभ किया। साथ ही लगभग 8 हज़ार पंचायत अदालतें भी स्थापित की गईं।
- ग्राम पंचायत स्तर पर पंचायत मंत्री, विकास समितियों का भी मंत्री नियुक्त किया गया।
- ज़िला नियोजन समिति में भी प्रत्येक तहसील से एक प्रधान मनोनीत किया गया।
- 1952–53 में ज़मींदारी प्रथा के विनाश के पश्चात् ग्राम समाज की स्थापना हुई और ग्राम सभाओं के अधिकार बढ़ाए गए।

दूसरा चरण (1953–54 से 1959–60)

- 1953–54 में पंचायतों की सक्रियता एवं विभिन्न विकास संबंधी कार्यक्रमों में उनका सहयोग बढ़ाने के लिये विधानसभा के सदस्यों की एक समिति नियुक्त की गई। इस समिति के सुझावों को दृष्टि में रखकर पंचायत राज संशोधन विधेयक तैयार किया गया जो पंचायतों के दूसरे आम चुनाव में क्रियान्वित हुआ।
- 1955 में पंचायतों का दूसरा आम चुनाव संपन्न हुआ जिसमें ग्राम सभा व ग्राम समाज के क्षेत्राधिकार को एक कर दिया गया।
- 1955 के चुनाव के बाद पंचायत अदालतों का न्याय पंचायत नामकरण किया गया।
- वित्तीय वर्ष 1959–60 में अधिकांश ग्राम सभाओं में कृषि समिति की स्थापना की गई।

तीसरा चरण (1960–61 से 1971–72)

- 1960–61 में गाँवों को आत्मनिर्भर तथा संपन्न बनाने के उद्देश्य से ग्राम पंचायत क्षेत्रों में कृषि उत्पादन तथा कल्याण उपसमितियों का गठन ग्राम सभा स्तर पर किया गया।
- वित्तीय वर्ष में 1960–61 में पंचायत राज अधिनियम में संशोधन द्वारा ग्राम सभा के प्रधान का चुनाव **गुप्त मतदान प्रणाली** द्वारा किये जाने का निश्चय हुआ।
- श्री बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार के निर्देशानुसार सत्ता के विकेंद्रीकरण के सिद्धांतों के अनुरूप **उत्तर प्रदेश क्षेत्र समिति एवं ज़िला परिषद अधिनियम, 1961** क्रियान्वित किया गया। इस अधिनियम के अनुसार प्रदेश में ग्राम सभा, क्षेत्र समिति तथा ज़िला परिषद की इकाइयों को एक सूत्र में बाँधा गया और प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था प्रारंभ हुई।

अध्याय
17

उत्तर प्रदेश : शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद (Uttar Pradesh : Education, Health & Sports)

शिक्षा, स्वास्थ्य और खेलकूद मनुष्य जीवन के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। शिक्षा, खेल और स्वास्थ्य किसी भी राज्य के विकास के लिये अनिवार्य तत्त्व के रूप में कार्य करते हैं। जहाँ एक ओर शिक्षा से मानसिक विकास होता है वहीं खेलकूद से शारीरिक विकास और अच्छे स्वास्थ्य का निर्माण होता है। ये तीनों तत्त्व मानव के सर्वांगीण विकास एवं राष्ट्र की प्रगति में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। सशक्त समाज शिक्षा, खेलकूद और उत्तम स्वास्थ्य से ही निर्मित होता है।

17.1 उत्तर प्रदेश : शिक्षा *(Uttar Pradesh : Education)*

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षित व्यक्ति ही राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति को वास्तविक गति प्रदान कर सकते हैं। राज्य की यह प्राथमिक ज़िम्मेदारी है कि वह अपने नागरिकों को शिक्षण संबंधी सुविधाएँ प्रदान करे।

वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश का साक्षरता प्रतिशत 67.7 है जिसमें पुरुषों का साक्षरता प्रतिशत 77.3 तथा महिलाओं का 57.2 प्रतिशत है जबकि इसी अवधि में भारत का साक्षरता प्रतिशत 73.0 है। शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राज्यों के स्तर को प्राप्त करना अभी भी प्रदेश के लिये एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है। इसी प्रकार से महिला और पुरुष के साक्षरता में भी 20.10 प्रतिशत का अंतर है। प्रदेश के विभिन्न जनपदों के मध्य साक्षरता की स्थिति एक समान नहीं है। जहाँ गौतमबुद्ध नगर की कुल साक्षरता 80.1 प्रतिशत है वहीं श्रावस्ती की मात्र 46.7 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश में वर्ष 2011 की जनगणनानुसार साक्षरता प्रतिशत सर्वाधिक बुंदेलखंड क्षेत्र का (69.3) तथा सबसे कम पूर्वी क्षेत्र का (67.4) है।

उत्तर प्रदेश : शिक्षा एक दृष्टि में

साक्षरता	अवधि	साक्षरता दर
1. पुरुष	2011	77.3%
2. स्त्री	2011	57.2%
3. कुल	2011	67.7%
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा	**अवधि**	**विद्यालयों की संख्या**
1. प्राथमिक विद्यालय	2016-17	167049
2. उच्च प्राथमिक विद्यालय	2016-17	77284
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	2016-17	25896
उच्च शिक्षा	**अवधि**	**महाविद्यालय/विश्वविद्यालय**
1. महाविद्यालय	2016-17	5866
2. विश्वविद्यालय	2016-17	45
प्राविधिक शिक्षा	**अवधि**	**संस्थान/कॉलेज**
1. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	2016-17	311
2. पॉलीटेक्निक	2016-17	145
3. राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज	2015-16	13*
4. मेडिकल कॉलेज	2015-16	17*

* अनंतिम

अध्याय
18

उत्तर प्रदेश : पर्यटन
(Uttar Pradesh: Tourism)

उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता का प्रदेश है। उत्तर प्रदेश भारत का एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन आकर्षण केंद्र है। यहाँ पर्यटकों का मन मोह लेने वाले अनेक सुंदर दर्शनीय स्थल हैं। इसी प्रदेश में विश्व की प्राचीन नगरों में से एक नगर वाराणसी और विश्वविख्यात ताज महल भी स्थित है। यह प्रदेश हिंदू तीर्थयात्रियों की आस्था का केंद्र है। यह प्रदेश बौद्ध धर्म की हृदय स्थली भी है एवं जैन धर्म का उद्‌गम क्षेत्र भी। उत्तर प्रदेश में पर्यटन करना एक अलग ही रोमांचक अनुभव को प्राप्त करना है। अनुमान है कि वर्ष-2017 में लगभग 2321.23 लाख भारतीय पर्यटक तथा लगभग 34.65 लाख विदेशी पर्यटक प्रदेश के भ्रमण पर आए। इलाहाबाद (प्रयागराज) में आयोजित होने वाले कुंभ पर्व को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व प्राप्त है। वर्ष-2019 में (प्रयागराज) इलाहाबाद में कुंभ मेला आयोजित किया जा रहा है।

18.1 पर्यटन सर्किट *(Tourism Circuits)*

उत्तर प्रदेश में पर्यटकों की सुविधा के लिये अलग-अलग रुचि के अनुसार स्थलों के चयनित पर्यटन परिपथों का सृजन किया गया है। यहाँ निम्नलिखित पर्यटन सर्किट बनाए गए हैं-

बौद्ध सर्किट *(Buddhist circuit)*

उत्तर प्रदेश में बौद्ध सर्किट के अंतर्गत बौद्ध पर्यटन स्थलों को शामिल किया गया है। गौतम बुद्ध ने उत्तर प्रदेश के कपिलवस्तु, कौशांबी, सारनाथ, संकिसा, श्रावस्ती और कुशीनगर में अपने जीवन का काफी लंबा समय व्यतीत किया था। सर्किट में भव्य स्तूप, प्राचीन मठ, बौद्ध मंत्रों के बीच ध्यान और पूजा करना बौद्ध तीर्थयात्रियों को अलौकिक अनुभव कराता है। बौद्ध सर्किट में निम्नलिखित स्थान सम्मिलित हैं-

- **कपिलवस्तु:** यहाँ पर गौतम बुद्ध यानी राजकुमार सिद्धार्थ का बचपन बीता और इसी कारण से कपिलवस्तु को पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है। वर्तमान में इसकी पहचान सिद्धार्थनगर ज़िले में पिपरहवा टाऊनशिप के रूप में है। बौद्ध काल में कपिलवस्तु शाक्य गणराज्य की राजधानी थी। कपिलवस्तु का ऐतिहासिक महत्त्व भी है।
- **कौशांबी:** उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद से लगभग 60 किमी. दूर स्थित कौशांबी में बुद्ध ने कई धर्मोपदेश दिये थे। यह स्थान बौद्ध अनुयायियों के लिये उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। कौशांबी में खुदाई के दौरान मूर्तियाँ, सिक्के और टेराकोटा की वस्तुओं के अतिरिक्त एक अशोक स्तंभ, एक पुराना किला और भव्य मठ के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- **सारनाथ:** बौद्ध सर्किट में शामिल सारनाथ में भगवान गौतम बुद्ध ने आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद अपना पहला धर्मोपदेश (धम्मचक्र प्रवर्तन) दिया था। वाराणसी से 10 किमी. दूर सारनाथ में महान धामेक स्तूप स्थित है। सारनाथ बौद्ध अनुयायियों की आस्था का केंद्र है। ई.पू. 273-232 में सम्राट अशोक द्वारा स्थापित चमकदार स्तंभ बौद्ध संघ की नींव की निशानी है। यहाँ प्राप्त हुए अशोक स्तंभ को राष्ट्रीय चिह्न/प्रतीक के रूप में अपनाया गया है। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में धामेक स्तूप, चौखंडी स्तूप, धर्मराजिका स्तूप, मूलगंध कुटी विहार आदि हैं।
- **संकिसा:** संकिसा भी बौद्ध धर्म अनुयायियों की आस्था का केंद्र है। ऐसी मान्यता है कि भगवान गौतम बुद्ध ने अपनी माँ को संबोधित करने के बाद यहाँ अवतरण लिया था। यह फर्रुखाबाद ज़िले में काली नदी के तट पर बसंतपुर गाँव के पास स्थित है। भगवान बुद्ध ने संकिसा में स्त्रियों को संघ में प्रवज्या की अनुमति दी थी। महान सम्राट अशोक ने इस पवित्र स्थान को चिह्नित करने के लिये यहाँ एक स्तंभ (लाट) का निर्माण करवाया था जिस पर हाथी की आकृति उकेरी गई थी।

अध्याय
19

उत्तर प्रदेश : कला एवं संस्कृति
(Uttar Pradesh : Art and Culture)

उत्तर प्रदेश प्राचीन भारतीय सभ्यता का उद्‌गम स्थल रहा है। उत्तर वैदिककालीन आर्यों की संस्कृति का मुख्य केंद्र उत्तर प्रदेश (मध्य देश) ही था। महाकाव्यों की कथानक का संबंध भी यहीं से है। आगे मौर्य शासक अशोक द्वारा चार सिंह युक्त स्तंभ का निर्माण वाराणसी के निकट सारनाथ में करवाया गया जो आजादी के बाद शासकीय चिह्न बना। भक्ति काल के दौरान वृंदावन व मथुरा उपासना के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे।

मुगलकाल में यहाँ दो भाषाएँ हिंदी और उर्दू पुष्पित-पल्लवित हुईं। संगीत परंपरा की अधिकांश विधाएँ इसी काल में उत्तर प्रदेश में विकसित हुईं। तानसेन व बैजू बावरा जैसे संगीतज्ञों के गुरु स्वामी हरिदास ने ध्रुपद गायन द्वारा अर्चना पद्धति का श्रीगणेश किया। कथक जैसे विख्यात शास्त्रीय नृत्य का विकास उत्तर प्रदेश में ही हुआ। इसके अलावा यहाँ ग्रामीण क्षेत्र के स्थानीय गीत व नृत्य का भी प्रचलन है। यहाँ विभिन्न उत्सवों, प्रमुख मेलों पर लोकगीत गाने की स्वस्थ परंपरा प्रचलित रही है।

स्थापत्य कला *(Architecture)*

प्राचीन काल

- प्रदेश में प्राप्त स्थापत्य कला के सर्वाधिक प्राचीन अवशेष मौर्यकालीन हैं।
- मौर्यकालीन शिला स्तंभ और स्तूपों का निर्माण चुनार लाल के बलुआ पत्थरों से हुआ था।
- अशोककालीन अहरौरा अभिलेख उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर से प्राप्त हुआ है।
- दिल्ली-मेरठ अभिलेख प्रारंभ में उत्तर प्रदेश के मेरठ ज़िले में पाया गया बाद में यह फिरोज़शाह तुगलक के समय दिल्ली लाया गया।
- दिल्ली-टोपरा अभिलेख उत्तर प्रदेश के सहारनपुर (खिज्राबाद) में पाया गया था, मध्यकाल में यह फिरोज़शाह तुगलक के समय दिल्ली लाया गया।
- मौर्यकालीन कला का सर्वोत्तम उदाहरण उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित सारनाथ का सिंह स्तंभ लेख है।
- अशोकालीन यक्ष और यक्षणियों की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं जो उत्तर प्रदेश के मथुरा के परखम और बोरादा से प्राप्त हुई हैं।
- मथुरा कला शैली कुषाण काल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
- कुषाणकालीन जैन तीर्थंकरों, बुद्ध तथा अनेक हिन्दू देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ यहाँ से प्राप्त हुई हैं।
- मंदिर निर्माणकला का विकास गुप्तकाल से शुरू हुआ था।
- गुप्तकालीन कई मंदिर उत्तर प्रदेश में पाए गए हैं।
- इन मंदिरों में देवगढ़ (ललितपुर) का दशावतार मंदिर एक पत्थर निर्मित मंदिर है।
- इसी समय के दो ईंट निर्मित मंदिर भीतरगाँव (कानपुर) और भीतरी (गाज़ीपुर) में पाए गए हैं।
- इतिहासकार वी.एस. अग्रवाल के अनुसार सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण मथुरा के शिल्पियों द्वारा किया गया था। इन कलाकारों की ख्याति दूर-दूर तक हो गई थी।
- कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव के काल में मथुरा कला का सर्वाधिक विकास हुआ।
- मथुरा से कुछ ऐसी बोधिसत्त्व प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं जिन पर कनिष्क संवत् की प्रारंभिक तिथियों के लेख खुदे हुए हैं।

मध्यकालीन कला

मध्यकालीन कला के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश में स्थापत्य, मूर्तिकला और चित्रकारी में प्रमुख योगदान जौनपुर के शर्की शासकों, बाबर, अकबर और शाहजहाँ का रहा।

अध्याय
20

उत्तर प्रदेश : पुरस्कार एवं सम्मान
(Uttar Pradesh : Awards and Honours)

उत्तर प्रदेश सरकार 26 जनवरी, 15 अगस्त तथा अन्य विशेष अवसरों पर विभिन्न क्षेत्रों में राज्य और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने वाले उत्तर प्रदेश के नागरिकों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करती है। इन पुरस्कारों के तहत सम्मान पाने वाले व्यक्ति को स्मृति चिह्न, शॉल और नकद पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। कुछ पुरस्कार एवं सम्मान राज्य की किसी विशेष संस्था द्वारा भी प्रदत्त किये जाते हैं, जैसे- संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी इत्यादि।

उत्तर प्रदेश द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि के लिये दिये जाने वाले पुरस्कार एवं सम्मान का विवरण निम्नलिखित है-

यश भारती सम्मान

- यह उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। इसकी शुरुआत 1994 में की गई थी।
- प्रायः यह सम्मान उत्तर प्रदेश में साहित्य, चिकित्सा, समाजसेवा, फिल्म, विज्ञान, पत्रकारिता, हस्तशिल्प, संस्कृति, शिक्षण, नाटक, संगीत, खेल, उद्योग तथा ज्योतिष इत्यादि के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान करने वाले को प्रदान किया जाता है।
- इस सम्मान के तहत 11 लाख रुपए, एक शॉल एवं प्रशस्ति-पत्र दिया जाता है।
- उत्तर प्रदेश में यश भारती सम्मान धारकों को पहले 50 हज़ार रुपए प्रतिमाह की पेंशन दी जाती थी, जिसे घटाकर अब 25 हज़ार रुपए प्रतिमाह कर दिया गया है।
- 2016-17 में अभिनेता नसीरुद्दीन शाह, क्रिकेटर भुवनेश्वर तथा टीवी कलाकार सुमोना चक्रवर्ती समेत कई व्यक्तियों को यह सम्मान दिया गया।

उत्तर प्रदेश रत्न पुरस्कार

- यह पुरस्कार सामान्यतः उत्तर प्रदेश से संबंधित अप्रवासी भारतीयों (NRIs) को कला, संस्कृति, विज्ञान एवं तकनीकी, शिक्षा तथा उत्तम सामाजिक कार्यों हेतु विदेश में उत्कृष्ट योगदान के लिये प्रदान किया जाता है।
- इस पुरस्कार का आयोजन प्रवासी दिवस के अवसर पर होता है।
- 2016 में फ्रैंक इस्लाम को विदेशों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों तथा उत्कृष्ट योगदान के लिये यह पुरस्कार दिया गया।

बेगम अख्तर पुरस्कार

- उत्तर प्रदेश में यह पुरस्कार संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये प्रदान किया जाता है।
- इस पुरस्कार के तहत पाँच लाख रुपए के साथ-साथ अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये जाते हैं।
- वर्ष 2017-18 के लिये यह पुरस्कार उपशास्त्रीय गायक और हारमोनियम वादक पं. धर्मनाथ मिश्र तथा गज़ल गायक उस्ताद सखावत हुसैन खाँ को दिया गया है।

लक्ष्मण पुरस्कार/रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार

- खेल में उत्कृष्ट योगदान के लिये पुरुष खिलाड़ियों को लक्ष्मण पुरस्कार एवं महिलाओं को रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार प्रदान किया जाता है।
- 2004 से उत्तर प्रदेश में खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिये यह पुरस्कार योजना शुरू की गई।
- इस योजना के तहत प्रांतस्तरीय टीम में कम-से-कम तीन साल तक रहने वाले व राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने वाले खिलाड़ियों को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।
- इस पुरस्कार के तहत 3 लाख 11 हज़ार रुपए एवं साथ-ही-साथ एक प्रशस्ति-पत्र और लक्ष्मण/रानी लक्ष्मीबाई की एक कांस्य प्रतिमा भी दी जाती है।

अध्याय
21

उत्तर प्रदेश : राज्य संचालित योजनाएँ
(Uttar Pradesh : State-run Schemes)

कोई भी राज्य चाहे वह विकसित हो या विकासशील, कई प्रकार की मूलभूत समस्याओं से घिरा रहता है। कुछ समस्याएँ ऐसी होती हैं जो हमेशा बनी रहती हैं, जैसे- स्वास्थ्य की समस्या, वृद्धजनों की समस्या, बच्चों एवं महिलाओं की समस्या, गरीबी, बेरोज़गारी इत्यादि। इसके अलावा सड़कों का रख-रखाव, नई सड़कों का निर्माण, पुल-पुलियों का निर्माण, कृषि क्षेत्र, बिजली, पानी इत्यादि की समुचित व्यवस्था, इन कार्यों को अनवरत चलाने के लिये राज्य सरकार बड़े स्तर पर योजनाओं का निर्माण करती है और उन्हें लागू करती है। जैसा कि हमें ज्ञात है कि सतत् विकास जीवन की आवश्यकता है और इसी सूत्र के मद्देनज़र कोई भी राष्ट्र अथवा राज्य विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर करने की कोशिश करता है। सतत् तथा समावेशी विकास प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि राज्य में व्याप्त गरीबी, बेरोज़गारी तथा स्वास्थ्य समस्याओं के दुश्चक्र पर काबू पाया जाए एवं अन्य कमियों को भी दूर किया जाए। उत्तर प्रदेश भी इन समस्याओं एवं कमियों से अछूता नहीं है। फलस्वरूप उत्तर प्रदेश सरकार विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से इन कमियों से निजात पाने का प्रयास करती रही है तथा साथ में ऐसे भी कार्यक्रम चला रही है जिससे विकास को गति मिले।

राज्य में संचालित की जाने वाली प्रमुख योजनाएँ निम्नलिखित है-

मुख्यमंत्री समग्र ग्राम विकास योजना

- इस योजना का शुभारंभ 24 जनवरी, 2018 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर अवध शिल्प ग्राम, लखनऊ में हुआ।
- इस योजना के तहत राज्य के सीमावर्ती क्षेत्र (अंतर्राष्ट्रीय/अंतर्राज्यीय) पर स्थित उपेक्षित गाँवों का सर्वांगीण विकास किये जाने का निर्णय लिया गया है।
- इस योजना का क्रियान्वयन ग्राम्य विकास विभाग (अनुभाग-10) द्वारा किया जाएगा। साथ ही योजनाओं के क्रियान्वयन तथा देख-रेख हेतु शासन के साथ ही मंडल और ज़िला स्तर पर भी समिति का गठन किया जाएगा।
- योजना के तहत पिछड़े राजस्व ग्रामों के साथ ही उनके मजरे, पुरवे और टोले-बसावटों का भी संपूर्ण विकास किया जाएगा। साथ ही, इसके तहत वनटांगिया, मुसहर एवं थारू आदि वर्गों के बाहुल्य वाले गाँवों का भी सर्वांगीण विकास किया जाएगा।
- इस योजना के तहत चयनित राजस्व ग्राम में 17 कार्यदायी विभागों के 24 कार्यक्रम संचालित किये जाएंगे।
- योजनांतर्गत देश की रक्षा में शहीद हुए सेना एवं अर्द्ध-सैनिक बलों के सैनिकों के ग्रामों को शहीद ग्राम घोषित किया जाएगा तथा इन ग्रामों में तोरण द्वार एवं शहीद हुए सैनिक की मूर्ति स्थापित की जाएगी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामोद्योग रोज़गार योजना

- इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती बेरोज़गारी का समाधान करना, ग्रामीण शिक्षितों के शहरों की ओर पलायन को हतोत्साहित करना तथा अधिक-से-अधिक रोज़गार के अवसर गाँव में ही उपलब्ध कराना है।
- इस योजना के अंतर्गत राज्य के पूर्वांचल तथा बुंदेलखंड के 24 जनपदों में 'एक जनपद-एक उत्पाद' के तहत चिह्नित उद्योगों को वरीयता प्रदान की जाएगी।
- पूर्वांचल तथा बुंदेलखंड क्षेत्र के जनपदों के अंतर्गत स्थापित लगभग 4500 इकाइयाँ इस योजना के क्रियान्वयन से लाभान्वित होंगी।
- इस योजना के अंतर्गत स्थापित इकाइयों को अधिकतम 13% ब्याज, उत्पादन का लाभ एवं 3 वर्षों तक अन्य सुविधाएँ अनुमन्य होंगी।
- इस योजना के तहत खनिज, वन, कृषि खाद्य बहुलक रसायन, इंजीनियरिंग तथा गैर-परंपरागत ऊर्जा और वस्त्र एवं सेवा आधारित उद्योग पात्र संभावित समूह के रूप में होंगे।

अध्याय
22

उत्तर प्रदेश : समसामयिकी
(Uttar Pradesh : Current Affairs)

किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के दृष्टिकोण से नवीनतम समसामयिकी घटनाक्रम का अहम योगदान रहता है। खासकर किसी राज्य विशेष की परीक्षा हो तो उसमें उस राज्य से संबंधित नवीनतम घटनाओं की जानकारी छात्रों के लिये आवश्यक है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के मद्देनज़र इस अध्याय में भी उत्तर प्रदेश राज्य से संबंधित पिछले एक वर्ष की सभी महत्त्वपूर्ण नवीनतम घटनाओं का समावेश करने का प्रयास किया गया है और इन महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

'एक जनपद एक उत्पाद' शिखर सम्मेलन का उद्घाटन

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 10 अगस्त, 2018 को लखनऊ स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग विभाग द्वारा आयोजित पहले 'एक जनपद एक उत्पाद' सम्मेलन का शुभारंभ किया।
- विदित हो कि यह योजना युवाओं के लिये बड़े पैमाने पर रोज़गार के अवसरों के सृजन के साथ ही, राज्य के समग्र और संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिये प्रतिबद्ध है।
- इस समिट में 'ई-मार्केटिंग', 'ज़ीरो डिफेक्ट-ज़ीरो इफेक्ट' और पूंजी निवेश में सहायता के लिये यहाँ उपस्थित संस्थानों के प्रतिनिधियों के साथ जिन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किये गए हैं उनसे ज़िला स्तर पर उत्पादकों के लिये नए अवसर प्राप्त होंगे।
- उत्तर प्रदेश के कई ज़िलों के उत्पादों की मांग राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है, लेकिन ऐसे बहुत से ज़िले और उत्पाद हैं जिन्हें इस योजना द्वारा समुचित प्रोत्साहन देकर उनकी क्षमता का व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है तथा कई नए ब्रांड विकसित किये जा सकते हैं।
- विकास और कल्याण के मानदंडों पर पीछे रह गए उत्तर प्रदेश के आकांक्षी ज़िलों में स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा, कौशल विकास तथा वित्तीय समावेशन के मापदंडों में सुधार लाने में भी सहायक होगी।

मुगलसराय जंक्शन का नाम बदलकर पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन हुआ

- वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मुगलसराय रेलवे जंक्शन का नाम बदलकर 'पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन' कर दिया गया।
- बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने रेलवे स्टेशन के नए नाम का उद्घाटन किया।
- इस अवसर पर राज्य सरकार ने दीनदयाल उपाध्याय स्टेशन पर 'स्मार्ट यार्ड परियोजना' का भी शुभारंभ किया।
- इसी अवसर पर एक मालगाड़ी रवाना की गई जो पूर्णत: महिलाओं द्वारा संचालित है। इस तरह भारत में पहली बार पूर्ण रूप से महिलाओं द्वारा मालगाड़ी चलाई गई।
- इसी तरह लखनऊ से दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन को आपस में जोड़ने वाली द्विसाप्ताहिक एकात्मता एक्सप्रेस का भी आरंभ किया गया।
- विदित हो कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ही मुगलसराय स्टेशन का नाम बदलने का सुझाव केंद्र सरकार के पास भेजा था।

उत्तर प्रदेश में मदरसा शिक्षा में बदलाव को मिली मंज़ूरी

- मई 2018 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक ने मदरसा शिक्षा में बदलाव को मंज़ूरी दे दी है।

अध्याय
23

उत्तर प्रदेश : प्रसिद्ध व्यक्तित्व
(Uttar Pradesh : Famous Personality)

उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है जो प्राचीनकाल से ही विभूतियों के मामले में धनी रहा है। जहाँ एक ओर उत्तर प्रदेश की प्राचीन एवं मध्यकालीन विभूतियों, जैसे– गौतम बुद्ध, बाणभट्ट, निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो, अबुल फज़ल, बीरबल आदि ने संपूर्ण विश्वपटल पर उत्तर प्रदेश और भारत का नाम ऊँचा किया तो वहीं दूसरी ओर सर सैय्यद अहमद खाँ, जीनत महल, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, अजीजन बेगम, पंडित मदन मोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, चंद्रशेखर आज़ाद इत्यादि ने उत्तर प्रदेश को नई दिशा देने का कार्य किया। उत्तर प्रदेश में रानी लक्ष्मीबाई, अजीजन बेगम आदि जैसी विरांगनाओं ने जन्म लिया, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा लाल बहादुर शास्त्री जैसे लोकप्रिय व्यक्तित्व ने संपूर्ण भारत का नेतृत्व किया। कबीर, सूरदास, तुलसीदास, रैदास, मुंशी प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चंद तथा हरिवंश राय बच्चन ने साहित्य के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व किया, तो वहीं अमिताभ बच्चन, आर.एस. बिष्ट, नित्यानंद महापात्र, बिस्मिल्ला खाँ इत्यादि ने अपनी-अपनी कला को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित किया। खेल के मामले में मेजर ध्यानचंद, सुरेश रैना, बरखा चौहान, कविता गुर्जर, मोहम्मद अली आदि ने अपनी क्षमता को जगजाहिर किया। अंततः विश्व स्तर पर उत्तर प्रदेश को नई पहचान दिलाने वाले इन महान विभूतियों का परिचय निम्नलिखित है–

निजामुद्दीन औलिया

- 1238 ई. (कुछ अन्य स्रोतों में यह 1236 भी मिलता है) में महान चिश्ती सूफी संत निजामुद्दीन औलिया का जन्म बदायूँ में हुआ था।
- निजामुद्दीन औलिया सूफी संत **बाबा फरीद** के शिष्य थे।
- इनका संपूर्ण जीवन सूफी धर्म के प्रचार-प्रसार में बीता। इनकी मृत्यु 1325 ई. में हो गई।
- इनके अनुसार इबादत से ज़्यादा पुण्य जरूरतमंदों की मदद करने से प्राप्त होती है। उन्होंने खुदा की इबादत को दो तरीकों से समझाया– **'लाज़िमी एवं मुत्तादी'**।
- लाज़िमी में हज़, रोज़ा रखना तथा खुदा का सज़दा शामिल है। इसका लाभ केवल उसे प्राप्त होता है जो इनका ध्यान करता है।
- मुत्तादी में दूसरों की मदद करना, लोगों से आपसी भाईचारा तथा ईमानदारी से काम करने आता है। मुत्तादी से प्राप्त होने वाला लाभ कभी खत्म नहीं होता है।

जियाउद्दीन बरनी

- बुलंदशहर ज़िले के बरन में जन्में जियाउद्दीन बरनी सल्तनतकालीन महान इतिहासकार थे।
- जियाउद्दीन बरनी मुहम्मद तुगलक तथा फिरोज़शाह तुगलक के समकालीन रहे।
- जियाउद्दीन बरनी की विख्यात कृति **'फतवा-ए-जहाँदारी'** सल्तनतकालीन प्रशासन की महत्त्वपूर्ण रचना सिद्ध हुई। वहीं इनकी दूसरी मुख्य कृति **'तारीख-ए-फिरोज़शाही'** से सल्तनतकालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।

टोडरमल

- सीतापुर ज़िले के लहरपुर गाँव में जन्में टोडरमल ने मुगलकालीन इतिहास में महानता हासिल की।
- टोडरमल प्रारंभ में शेरशाह सूरी की सेवा में रहे, लेकिन बाद में मुगल सम्राट अकबर के नौ रत्नों में से एक हुए; तत्पश्चात् उन्होंने राजस्व मंत्री का पद हासिल किया।
- टोडरमल ने दहसाला बंदोबस्त स्थापित किया, जो भू-राजस्व व्यवस्था का नवीन स्वरूप था।
- टोडरमल एक योग्य वित्त मंत्री के साथ-साथ एक कुशल सैन्य संचालक भी साबित हुआ।

अध्याय
24

उत्तर प्रदेश बजट (2018-19) : एक विश्लेषण
[Uttar Pradesh Budget (2018-19) : An Analysis]

24.1 उत्तर प्रदेश बजट, 2018-19 *(Uttar Pradesh Budget 2018-19)*

उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री राजेश अग्रवाल ने 16 फरवरी, 2018 को वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिये राज्य का बजट विधानसभा में पेश किया।

प्रमुख बिंदु

- राज्य सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिये ₹ 4 लाख 28 हज़ार 384 करोड़ 52 लाख (428384.52 करोड़ रुपए) के व्यय का आकलन किया गया है। यह पिछले वित्तीय वर्ष के बजट के सापेक्ष 11.4 प्रतिशत अधिक है।
- बजट में राजकोषीय घाटे को, सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 2.96 प्रतिशत पर सीमित रखा गया है।
- बजट में राज्य की समग्र ऋणग्रस्तता, सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 30 प्रतिशत से कम होकर 29.8 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है।
- 'स्टार्टअप योजना' तथा 'एक ज़िला-एक उत्पाद' योजना के लिये बजट में ₹ 250-250 करोड़ दिये जाने की घोषणा की गई है।
- बजट में लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रदेश में सड़कों के निर्माण कार्यों हेतु ₹ 11 हज़ार 343 करोड़ का बजट आवंटित किया गया है।
- बजट में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) और प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के लिये क्रमशः ₹ 11,500 करोड़ व ₹ 2217 करोड़ आवंटित किये गए हैं।
- राज्य सरकार ने लखनऊ, कानपुर, आगरा, वाराणसी, इलाहाबाद, अलीगढ़, झाँसी, मुरादाबाद, बरेली तथा सहारनपुर हेतु स्मार्ट सिटी मिशन योजना के अंतर्गत ₹ 1650 करोड़ का आवंटन किया है।

ऊर्जा क्षेत्र

- बजट में ऊर्जा क्षेत्र की परियोजनाओं के लिये ₹ 29 हज़ार 883 करोड़ का आवंटन किया गया है जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 54 प्रतिशत अधिक है।
- भारत सरकार की सौभाग्य योजना के तहत लगभग डेढ़ करोड़ घरों को मार्च, 2019 तक विद्युत कनेक्शन दिये जाने का लक्ष्य रखा गया है।
- उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष ग्रामीण क्षेत्रों को दी गई विद्युत आपूर्ति में लगभग 23 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

मेट्रो रेल परियोजनाएँ

प्रदेश में वर्तमान समय में लखनऊ में मेट्रो रेल का व्यावसायिक संचालन प्रारंभ हो चुका है जबकि कानपुर, मेरठ एवं आगरा में मेट्रो रेल सेवा प्रारंभ किये जाने के संबंध में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार (डी.पी.आर.)की जा चुकी है एवं वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर और झाँसी की मेट्रो परियोजनाओं को केंद्र सरकार की नई नीति के अनुरूप संशोधित किया जाएगा।

अध्याय
25

विविध
(Miscellaneous)

उत्तर प्रदेश : नगरों तथा जनपदों के उपनाम			
नगर का नाम	उपनाम	नगर का नाम	उपनाम
सहारनपुर	नक्काशीनगर	पीलीभीत	छोटा पंजाब
चित्रकूट	वनवास नगर, मंदराचल	देवरिया	देवारण्य, देवपुरिया
मुज़फ्फरनगर	सरवट नगर	शाहजहाँपुर	कालीन उद्योग नगर
फतेहपुर	रणभूमि नगर	आजमगढ़	कैफी आज़मी नगर
रामपुर	नवाबों का शहर, चाकुओं का नगर	लखीमपुर खीरी	लक्ष्मीपुर
प्रतापगढ़	बेला भवानी नगर, राजाओं का गढ़	मऊ	मऊनाथभंजन
मुरादाबाद	पीतल नगरी, बर्तनों का शहर	सीतापुर	नैमिषारण्य नगर
कौशांबी	आद्य नगरी	बलिया	बागी बलिया नगर
लखनऊ	नवाबों का शहर, बागों का नगर, आमों का नगर, नजाकत-नफासत का शहर	हरदोई	हरिद्रोही नगर
इलाहाबाद (अब प्रयागराज)	संगम नगरी, कुंभ नगरी, तीर्थराज, प्रयागराज, अमरूद नगरी	जौनपुर	शीराज-ए-हिंद
अमरोहा	ज्योतिबा फुले नगर	उन्नाव	चंद्रशेखर आजाद नगर
बिजनौर	कटेहर क्षेत्र	गाज़ीपुर	काशी की बहन
मेरठ	क्रांति नगर, कैंची नगर	बदायूँ	निजामुद्दीन औलिया नगर
फैज़ाबाद	ईश्वर का नगर	चंदौली	धान का कटोरा
बागपत	टाइगर्स की भूमि	कन्नौज	इत्र नगर, खुशबुओं का शहर, कान्यकुब्ज, नगर महोदयश्री
गाज़ियाबाद	छोटा दिल्ली, उद्योग नगरी	वाराणसी	विश्वनाथ नगरी, मुक्ति नगर, घाटों का नगर
सुल्तानपुर	कुसपुरा	अमेठी	छत्रपति शाहू जी महाराज नगर
मथुरा	कृष्ण नगरी, पेंड़ा का नगर, पंडों का नगर	भदोही	संत रविदास नगर, कालीन सिटी
बहराइच	सैयद मसूद गाजी नगर, ऋषि भूमि	इटावा	चंबल नगर
बुलंदशहर	अहाड़ क्षेत्र	सोनभद्र	पॉवर कैपिटल ऑफ इंडिया
श्रावस्ती	सहेत-महेत नगर	औरैया	दि लैंड ऑफ डायवर्सिटी
अलीगढ़	ताला नगरी	कासगंज	कांशीराम नगर
बलरामपुर	देवी पाटन, शक्तिपीठ	कानपुर देहात	रमाबाई नगर
हाथरस	महामाया नगर	कानपुर नगर	भारत का मैनचेस्टर, उद्योग नगर, चर्म नगर
गोंडा	जयप्रकाश नगर	अयोध्या	राम नगर, राम जन्म भूमि
गौतमबुद्ध नगर	नोएडा, ग्रेटर नोएडा	जालौन	पंचनंदा नगर
सिद्धार्थ नगर	बुद्ध नगरी	शामली	प्रबुद्ध नगर
आगरा	ताज नगरी, पेठा नगरी	झाँसी	बुंदेलों की नगरी

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456